गीत

खुदा कहाँ है?

महेश थार

मैंने खुद से पूछा खुदा कहाँ है ?
हंस के बोला तुझसे जुदा कहाँ है.
क्यूँ जाता है मंदिर मस्जीद
क्यूँ जाता है चर्च गुरुद्वारे?
मैंने इनको ठेका दिया कहाँ है ?हंस के बोला....
मिलना है बाजार में मिल
दिल के सच्चे दरबार में मिल
इन मासूमों के प्यार में मिल
हाँ दुखियों के संसार में मिल
मेरा आना जाना रोज वहाँ है..... . हंस के बोला.....
मजदूरों का बहे पसीना
असहायों का देख तू जीना
फटेहाल बेघर लोगों का
सर्द रात में सोना जगना
मिल जाउंगा ये सब रहते जहां है . हंस के बोला.....
महल मंदिरों में कैसे मैं सो सकता हूँ?
पर्वत जंगल निर्जन में क्या रह सकता हूँ?
आँख मूँद कर छोड़ के अपनी जिम्मेदारी
अपने सृजन से कैसे विस्मित रह सकता हूँ?
सुख दुःख सबके मेरे दिल में निहां है..... हंस के बोला...
मैंने खुद से पूछा खुदा कहाँ है
हंस के बोला तुझसे जुदा कहाँ है.

****

Scanned with OKEN Scanner